दैनिक भास्कर 2
भोपाल. शुक्रवार. 2 अगस्त, 2013

यूनियन कार्बाइड | सीएसई ने 15 अध्ययन रिपोर्टों का विश्लेषण कर कचरे के निपटान के लिए तैयार किया एक्शन प्लान

सिर्फ रिपोर्ट बनती रही, एक्शन नहीं

सीएसई के डिप्टी डायरेक्टर जनरल चंद्रभूषण ने कहा - अब तक यूका कचरे के निपटान की सिर्फ बातें हुई हैं, काम नहीं। राज्य सरकार यदि एक्शन प्लान को माने तो सिर्फ पांच साल में हो सकता है जहरीले कचरे का निपटान। जरुरत है सरकार की इच्छाशक्ति और प्रक्रिया में पारदर्शिता की।

नगर संवाददाता | भोपाल

यूनियन कार्बाइड कारखाने में अब भी जगह-जगह जहरीले रसायन फैले हुए हैं। कारखाने की मशीनों पर पारे की मोटी परत जमी हुई है। एमआईसी रिफाइनरी प्लांट में अब भी जहरीले रसायनों की दुर्गंध आ रही है। गुरुवार दोपहर बाद जब यूनियन कार्बाइड का जायजा लेने सीएसई के डिप्टी डायरेक्टर जनरल चंद्रभूषण व यूका के पूर्व प्लांट ऑपरेटर टीआर चौहान पहुंचे तो फैक्टरी के भीतर यही हाल दिखा। चंद्रभूषण ने कहा कि त्रासदी के बाद अब तक यूका के कचरे पर 15 अलग-अलग स्टडी हुई लेकिन हर रिपोर्ट मीडिया की खबरों और सरकारी फाइलों में ही सिमटकर रह गई। अब तक तो 350 टन कचरे की बात हो रही है, जबकि जमीन में दबा बाकी रासायनिक कचरा भी बेहद खतरनाक है।

सीएसई के डिप्टी डायरेक्टर जनरल यूका कचरे के निपटान के लिए एक्शन प्लान जारी करने के बाद यूका कारखाना गए थे। उन्हें फैक्ट्री के तत्कालीन प्लांट ऑपरेटर चौहान ने बताया कि दिसंबर 1984 में मिथाइल आईसो साइनेट गैस का रिसाव एमआईसी रिफाइनरी प्लांट की वेंट हेडर टैंक की लाइन के ब्लाक होने के कारण हुआ था। त्रासदी के दौरान कारखाना के प्लांट की मशीनों पर तमाम पाइप लाइनों से निकले जहरीले केमिकल उपकरणों पर गिर गए थे। इन केमिकल्स को 2005 के प्लांट के सफाई के बाद भी नहीं उठाया गया है। इसके चलते अब भी उपकरणों पर जमा पारा सहित अन्य केमिकल्स बारिश के पानी में घुलकर जमीन में पहुंच रहे हैं।

यूका कारखाने में मशीनों पर जमा केमिकल देखती सीएसई की टीम।

नहीं उठाया गया कारखाने का पूरा कचरा

चंद्रभूषण ने बताया कि रामकी कंपनी के कर्मचारियों ने कारखाना से जहरीला कचरा उठाने की मात्र औपचारिकता की है। परिसर में कई स्थानों पर जहरीले कचरे को निपटान के नाम पर जमीन में दबाया जाता था, जो अब भी वहीं दबा हुआ है। कारखाने के कोकयाई में सिर्फ 350 टन जहरीला कचरा रखा हुआ है, जो कारखाने के एक दर्जन से ज्यादा जगहों से उठाया गया है। इस कचरे में 164 टन मिट्टी है।

सिर्फ पांच मोटर बचीं

कारखाने के पूर्व ऑपरेटर टीआर चौहान ने बताया कि परिसर की विभिन्न मशीनों में 370 प्रकार की मोटरें लगी हुई थी। इनमें से अब सिर्फ पांच मोटरें बची हैं। अन्य मोटरें कारखाना की ठीक से निगरानी न होने के कारण असामाजिक तत्व चुराकर ले गए हैं। चौहान ने बताया कि गर्मियों में कारखाना परिसर की जमीन पर पारा भारी मात्रा में फैला हुआ दिखाई भी देता है।

ये धातुएं मिली हैं

भूजल प्रभावित इलाकों में जिंक, मैंग्नीज, कॉपर, मरकरी, क्रोमियम, लैड, निकिल जैसे हानिकारक धातुओं की मात्रा मानक से अधिक मिली है। चंद्रभूषण का कहना है कि अभी तक जो अध्ययन हुआ है, वो तीन किमी के दायरे में हुआ है। एक ही दिशा में बहने से पिछले 29 सालों में भूजल कहां तक पहुंच गया है, यह किसी को नहीं मालूम। इसका दायरा दस किमी तक फैलने की आशंका है।

देशभर के विशेषज्ञों को जुटाकर तैयार किया प्लान

एक्शन प्लान तैयार करने के लिए सीएसई उन सभी संस्थाओं को एक मंच पर लेकर आया, जिन्होंने रिपोर्ट तैयार की हैं। इनमें आईआईटीआर, नीरी, एनजीआरआई, आईआईसीटी, सीएसई, सीपीसीबी, ग्रीनपीस इंटरनेशनल, फैक्ट फाइंडिंग मिशन एंड सृष्टि, पीपुल्स साइंस इंस्टिट्यूट, स्टेट रिसर्च लेबोरेटरी (पीएचई) मप्र शासन, भोपाल ग्रुप फॉर इंफॉरमेशन एंड एक्शन, यूनियन कार्बाइड लिमिटेड आदि शामिल थीं। इन संस्थाओं की रिपोर्ट का जो निष्कर्ष था, उसका विश्लेषण किया गया। सभी की रिपोर्ट में प्रदूषण के रिजल्ट अलग-अलग हैं, लेकिन सभी ने यहां की मिट्टी व भूजल में भारी धातु होना पाया है।

और स्टडी की जरूरत

अध्ययन के अनुसार 1969 से लेकर 1984 के बीच में आर्थो डाइक्लोरोबेंजिन, कार्बन टेट्रा क्लोराइड, कार्बारिल, कार्बन टेट्रा क्लोराइड, एल्डिकार्ब, नैप्थलीन व अल्फा नैप्थॉल जैसे घातक रसायन कारखाने के भीतर व बाहर स्थित सोलर इवपोरेशन पोंड (एसईपी) में डाले जाते रहे हैं। कारखाना बंद होने के बाद यह जहरीला कचरा यहीं पर और एसईपी में ही छोड़ दिया गया। इस कारण यहां की मिट्टी और भूजल संक्रमित हुआ। हालांकि एसईपी को लेकर अभी तक जो अध्ययन हुआ है, उसमें विरोधाभास है। इसके अलावा यहां और भी डंप साइट है, जिसमें जहरीला कचरा है। इस पर अभी और अध्ययन करने की जरूरत है।

गैस प्रभावितों पर चल रही रिसर्च

कारखाने से रिसी मिक गैस से प्रभावितों के स्वास्थ्य पर हुए असर के दूरगामी परिणामों पर रिसर्च की जा रही है। यह रिसर्च इस साल के अंत तक पूरी होगी। यह जानकारी गुरुवार को भोपाल ग्रुप फॉर इनफॉर्मेशन एंड एक्शन के प्रमुख सतीनाथ षड़ंगी ने दी। वे एक्शन प्लान पर चर्चा कर रहे थे। षड़ंगी ने बताया कि अलग-अलग आयु वर्ग के लोगों के स्वास्थ्य पर गैस के हुए असर का अध्ययन आठ वैज्ञानिकों का दल कर रहा है। इस रिसर्च में 21,000 परिवारों को शामिल किया है।

गौर के पास नहीं प्लान देखने का वक्त

सीएसई ने जो एक्शन प्लान बनाया है, गैस राहत एवं पुनर्वास मंत्री बाबूलाल गौर उसे देखना भी मुनासिब नहीं समझते। चंद्रभूषण का कहना है कि महीने भर से वे गौर से मिलने का वक्त मांग रहे हैं, लेकिन उनके पास वक्त नहीं है। हालांकि गौर का कहना है कि वे सीएसई के लोगों को नहीं जानते। न ही उन्होंने मिलने का समय मांगा है। चंद्रभूषण ने कहा कि शुरू से ही मप्र सरकार का रवैया ढुलमुल रहा है। अप्रैल में जब एक्शन प्लान के लिए देशभर के प्रख्यात वैज्ञानिकों व विशेषज्ञों को बुलाया गया तो प्रदेश से कोई मंत्री और अधिकारी नहीं आया।

रिपोर्ट तो जरूर भेजेंगे

चंद्रभूषण ने कहा कि भले ही मंत्री हमें मिलने का समय न दें लेकिन हम अपनी ये रिपोर्ट राज्य सरकार को जरूर भेजेंगे। हमने 29 सालों में हुई 15 स्टडी के अध्ययन के आधार पर एक्शन प्लान बनाया है। इसे लागू करना मध्यप्रदेश सरकार की जिम्मेदारी है। इसे लागू करने में कोई कानूनी अड़चन भी नहीं है। बीते 29 सालों में यूका का कचरा उठाने की सिर्फ बातें हुई हैं, अब तक इस दिशा में काम शुरू नहीं हुआ है। इसका प्लान बनाने में दो साल लगेंगे और प्रदूषण हटाने व नए निर्माण में तीन साल का वक्त लगेगा।

दैनिक भास्कर 2
भोपाल. शुक्रवार. 2 अगस्त, 2013

लगातार बढ़ रहा है भूजल प्रदूषण

नसं. भोपाल। यूनियन कार्बाइड कारखाने में मौजूद जहरीले कचरे के रिसाव के चलते भूजल प्रदूषण का दायरा लगातार बढ़ रहा है। भविष्य में यह 10 किमी तक भी फैल सकता है। सेंटर फॉर साइंस एंड इनवायरमेंट (सीएसई) ने पिछले 20 सालों में हुई 15 जांच का विश्लेषण करते हुए यह बात कही है।

सीएसई का कहना है कि अलग-अलग समय पर दी गई रिपोर्ट पर सरकार ने कोई कार्रवाई नहीं की। हालात सुधारने के लिए सीएसई ने गुरुवार को एक एक्शन प्लान तैयार किया। इसे राज्य सरकार को सौंपा जाएगा। गुरुवार को राजधानी में सीएसई के डिप्टी डायरेक्टर जनरल चंद्रभूषण ने एक्शन प्लान जारी किया है। उनका कहना है कि प्लान में बताए उपायों से भूजल व मिट्टी के प्रदूषण को काफी हद तक दूर किया जा सकता है।

एक्शन प्लान में ये खास सुझाव

» कारखाने को सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर इंडस्ट्रियल डिजास्टर मैनेजमेंट के रूप में विकसित किया जाए।

» यूका कारखाने को प्रदूषण मुक्त करने के लिए समय का निर्धारण किया जाए।

» सारा काम पारदर्शी हो। इसके लिए केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को नोडल एजेंसी बनाया जाए।

» सोलर इवपोरेशन पॉन्ड (तालाब) में मौजूद जहरीले कचरे को नष्ट करें।

» वेंट, वैंट स्क्रबर, स्टोरेज टैंक और कंट्रोल रूम को संरक्षित किया जाए।

» कारखाना क्षेत्र में जमा और फैले कचरे में मौजूद रसायनों को उनकी प्रकृति के [illegible]

तीन किमी का भूजल पहले से प्रदूषित

यूका कारखाने के पास रेलवे लाइन से लगे जेपी नगर, नवाब कॉलोनी, शिव शक्ति नगर, ब्ल्यू मून कॉलोनी, अटल अयूब नगर, अन्नू नगर, कैंची छोला, आरिफ नगर, प्रेम नगर, नवजीवन कॉलोनी, गरीब नगर, सुंदर नगर, न्यू आरिफ नगर, शक्ति नगर, प्रीत नगर, शिव नगर व इंदिरा नगर का भूजल सबसे ज्यादा प्रदूषित है।